श्रीराम वनगमन मार्ग
भारत एकता यात्रा - 1



अयोध्या - रामेश्वरम्

16 फरवरी - 09 मार्च, 2022

26 दिसम्बर, 2022 - 17 जनवरी, 2023



यात्रा का उद्देश्य



गोस्वामी तुलसी दास ने रामचरित मानस लिखने **का उद्देश्य** "स्वान्तः सुखाय" अर्थात **" अपने स्वयं के सुख के लिए "** बताया है |

"स्वान्तः सुखाय तुलसी रघुनाथ गाथा--" रामचरित मानस, प्रथम सोपान, बालकाण्ड, || ७ ||

हमारी यह यात्रा भी स्वान्तः सुखाय ही है | बाल्यकाल से ही पुस्तकों, गाँव की रामलीला और टी. वी. के माध्यम से श्रीराम के बारे में बहुत पढ़ा, देखा और सुना पर उन्हें और जानने की प्यास बुझने की जगह बढती ही गयी | यह यात्रा उसी प्यास को बुझाने की दिशा में एक और प्रयास है | ऐसा लगता है कि श्रीराम के वन गमन मार्ग के पदचिन्हों पर चलने से शायद कुछ और जानने को मिले, कोई नयी अंतर्दृष्टि मिले या शायद वह अमृत मिले जिससे यह प्यास बुझ जाये |अतः श्रीराम को कुछ और जानने की जिज्ञासा इस यात्रा का मुख्य प्रेरक तत्व है |

प्राचीन काल से ही हमारे सन्तों और ऋषियों ने देश के चारों कोनों पर तीर्थस्थानो, धामों आदि की स्थापना की थी, ताकि इसी बहाने देश वासी एक दुसरे की संस्कृतियों, रीति रिवाजों आदि को देखें, समझें जिससे राष्ट्रीय एकता के सूत्र दृढ हों |

देश के उत्तर से दक्षिण तक हजारों किलोमीटर की पैदल यात्रा करने वाले श्रीराम ही इस अनूठे प्रयोजन के 'जनक' और 'प्रणेता' थे | भारत में "अनेकता में एकता" के अमूर्त विचार को मूर्त रूप देने की प्रक्रिया में उन्होंने विश्व को सच्चे मानव धर्म, शांति, सौहाद्र और भाईचारे का अमर सन्देश दिया | हमारी यह "एकता यात्रा" राष्ट्रीय एकता के उन सूत्रों को समझने, उन्हें दृढ करने और शांति तथा सौहाद्र के उनके अमर संदेशों को जन जन तक पहुँचाने की दिशा में एक लघु प्रयास है |

अयोध्या से रामेश्वरम तक की लम्बी यात्रा में श्रीराम ने जिन ग्रामवासियों, वनवासियों, गाँवों, बस्तियों, कस्बों, नदियों, तालाबों, जंगलों, वृक्षों आदि को देखा, छुआ, जिनके साथ समय बिताया, जिनसे बातें कीं, उन्हें नजदीक से देखने, छूने और संभव हो तो उनके साथ, उस वातावरण में कुछ क्षण व्यतीत करने, राम से साक्षात्कार होने जैसा अनुभव प्राप्त करने और भारत दर्शन का लोभ इस यात्रा का एक अन्य महत्वपूर्ण उद्देश्य है |

श्रीराम ने सालों, महीनों में यह यात्रा पूरी की | बहुत से देशवासी आस्था और रूचि वश इन मार्गों पर चलना चाहते हैं, यात्रा करना चाहते हैं, पर पर्याप्त सुचना के अभाव में अपनी इच्छा पूरी नहीं कर पाते |

इस यात्रा का एक मुख्य उद्देश्य श्रीराम वन गमन मार्ग के प्रमुख स्थलों, यातायात के साधनों, ठहरने के सुविधाजनक स्थानों और वहां श्रीराम से जुड़े सभी स्थलों के बारे में प्रामाणिक,सरल और सुरुचि पूर्ण जानकारी सुलभ कराना है | इससे देश में धार्मिक, सांस्कृतिक और अवकाश पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा, श्रीराम और उनके द्वारा स्थापित आदर्शों में लोगों की रूचि बढ़ेगी, आर्थिक गतिविधियां बढ़ेगी और राष्ट्र सुदृढ़ होगा।

मैंने अपनी सेना और रेल सेवा के दौरान देखा है कि दक्षिण से बहुत श्रद्धालु उत्तर भारत के तीर्थस्थानों जैसे काशी, प्रयाग, अयोध्या और पर्यटन स्थलों जैसे कश्मीर, आगरा आदि के भ्रमण के लिए आते हैं, पर उस अनुपात में उत्तर भारतीय दक्षिण भारत के तीर्थस्थानों और पर्यटन स्थलों के भ्रमण के लिए नहीं जाते | इसका एक बड़ा कारण पर्याप्त सुचना का अभाव है | उम्मीद है, यह यात्रा इस कमी को कुछ हद तक दूर करेगी |

इसी क्रम में हमारी यह यात्रा भी अगर गोस्वामी जी के रामचरित मानस की तरह ' स्वान्तः' से 'सर्वांत: सुखाय' हो जाये तो यह प्रयास सार्थक हो जायेगा |

श्रीराम



सन्देश

कल, आज और कल !

आज विश्व में उथल-पुथल मची हुई है। देशों और समुदायों के बीच व्याप्त हिंसा, आपसी कलह, कोरोना जैसी बिमारियां, आर्थिक असमानता, अनियंत्रित उपभोग और सुरसा के मुंह की तरह बढती महत्वाकांक्षाओं ने लोगों का सुख चैन छीन लिया है | निराशा में उपजे तनाव, कुंठा तथा अवसाद के कारण बहुत से लोग मानसिक और शारीरिक व्याधियों का चलता फिरता घर बन गए हैं | ऐसे में श्रीराम की बहुत याद आती है | और याद आता है, मानवता को उनका शांति सद्भाव और भाईचारे का संदेश जो आज बहुत प्रासंगिक और इन व्याधियों की सबसे अचूक दवा है |

श्रीराम के पद चिन्हों पर चलने वाली ' श्रीराम वन गमन मार्ग: भारत एकता यात्रा' के आरंभ होने के पावन अवसर पर श्रीराम और मानव कल्याण के उनके शाश्वत संदेशों को याद करना समीचीन है |

अगले कुछ अनुच्छेदों में श्रीराम कथा का आरंभ, उनका धर्म, भारत की एकता में उनका अप्रतिम योगदान और विश्व सभ्यता पर उनके प्रभाव का संक्षिप्त विवरण दिया गया है |

आरम्भ

आदिकाव्य वाल्मीकि रामायण में रामकथा का आरंभ देवर्षि नारद और महर्षि वाल्मीकि के संवाद से होता है | देवर्षि वाल्मीकि आश्रम में पधारे हैं | आदिकवि देवर्षि से पूछते हैं:

"ॐ तपः स्वाध्यायनिरतं तपस्वी वाग्विदाम वरम |
नारदम परिपप्रच्छ वाल्मिकिर्मुनिपुंगवम " ||1|| प्रथम सर्ग | बालकाण्ड, वाल्मीकि रामायण |

अर्थात - तपस्वी वाल्मीकि जी ने तपस्या और स्वाध्याय में लगे हुए विद्वानों में श्रेष्ठ मुनिवर नारद जी से पूछा ||

“को न्वस्मिन साम्प्रतं लोके गुणवान कश्च वीर्यवान |
धर्मज्ञश्च कृतज्ञश्च सत्यवाक्यो दृढव्रत: “ ||2|| वाल्मीकि रामायण | प्रथम सर्ग | बालकाण्ड |

अर्थात - इस समय संसार में गुणवान, वीर्यवान, धर्मज्ञ, उपकार माननेवाला, सत्यवक्ता और दृढप्रतिज्ञ कौन है? अगले तीन श्लोकों (3,4,5) में आदिकवि ने मनुष्यों में पाए जाने लायक कुछ और गुणों जैसे सदाचार, जितेन्द्रिय, मन पर अधिकार करने वाला, परनिंदा नहीं करने वाला, विद्वान, सामर्थ्यवान, समदर्शी, सुदर्शन तथा संग्राम में जिससे देवता भी डरते हों, का उल्लेख करते हुए देवर्षि नारद जी से किसी ऐसे पुरुष के बारे में जानकारी देने की प्रार्थना की |

यह सुनकर तीनो लोकों और कालों का ज्ञान रखने वाले नारद जी प्रसन्नता पूर्वक बोले;
इक्ष्वाकुवंशप्रभवो रामो नाम जनै:श्रुत: |
नियतात्मा महावीर्यो द्युतिमान धृतिमान वशी ||8 ।| वाल्मीकि रामायण | प्रथम सर्ग | बालकाण्ड |

अर्थात - इक्ष्वाकु वंश में उत्पन्न हुए एक ऐसे पुरुष हैं, जो लोगों में राम नाम से विख्यात हैं, वे ही मन को वश में रखने वाले, महाबलवान, कान्तिमान, धैर्यवान और जितेन्द्रिय हैं |

फिर अगले 10 श्लोकों (9 से 18) में देवर्षि ने उपरोक्त के अतिरिक्त राम के 65 और गुणों का वर्णन करते हुए उन्हें महान धर्मज्ञ, सत्य प्रतिज्ञ, जीवों तथा धर्म के रक्षक, समदर्शी, सत्यवादी, दानी, गंभीरता और धैर्य में समुद्र, प्रजापालन में प्रजापति, क्रोध में कालाग्नि, क्षमा में पृथ्वी, त्याग में कुबेर, सत्यपालन में धर्मराज और पराक्रम में साक्षात् विष्णु के समान बताया |

इस तरह देवर्षि नारद ने इक्ष्वाकु वंशी श्रीराम को सर्वगुण संपन्न और धर्म के सभी लक्षणों से युक्त बताया | इसके पश्चात् उन्होंने श्रीराम चरित्र का संक्षेप में वर्णन किया और महर्षि वाल्मीकि से विदा लेकर आकाशमार्ग से देवलोक चले गये |

नारद जी को विदा कर महर्षि वाल्मीकि स्नान करने गंगा के नजदीक ही तमसा नदी के तटपर गए जहाँ वन में उन्होंने क्रौंच पक्षी के एक जोड़े को आनंद से कलरव करते देखा | उसी क्षण उनके देखते ही एक निषाद ने नर पक्षी को बाण से मार गिराया | मादा पक्षी के करुण विलाप से व्यथित महर्षि के मुख से यह प्रसिद्ध श्लोक निकला:

“मा निषाद प्रतिष्ठाम त्वमगमः शाश्वतीः समाः |
यत क्रौंचमिथुनादेकमवधी: काममोहितं || श्लोक 15 || सर्ग 2, वाल्मीकि रामायण, बालकांड ||
‘निषाद ! तुझे नित्य-निरंतर कभी भी शांति न मिले क्योंकि तूने इस क्रौंच के जोड़े में से एक की, जो काम से मोहित हो रहा था, बिना किसी अपराध के ही हत्या कर डाली |’

शाप स्वरूप, शोक में अपने मुख से निकले शब्द समूहों को महर्षि ने ‘श्लोक’ का नाम दिया, क्योंकि वह चार चरणों में आबद्ध था, जिसके हर चरण में बराबर-बराबर आठ अक्षर थे, जिन्हें लयबद्ध कर वीणा पर गाया जा सकता था | इस तरह विश्व में शोक से श्लोक और श्लोक से कविता तथा काव्य की उत्पति हुई और महर्षि को आदिकवि कहा गया |

महर्षि निषाद को दिए गए शाप और श्लोक पर अपने आश्रम में बैठे विचार कर ही रहे थे कि उसी समय वहां परम पिता ब्रह्मा जी पधारे | परम पिता ने महर्षि को बताया कि उनके मुख से वे शब्द उन्ही की प्रेरणा से एक पवित्र उद्देश्य के लिए निकले हैं | उन्होंने महर्षि को उन श्लोकों के माध्यम से श्रीराम चरित्र के वर्णन का आदेश दिया |

"रामस्य चरितं क्रित्स्त्रम कुरु त्वमृषीसत्तम |
धर्मात्मनो भगवतो लोके रामस्य धीमतः ||
वृतं कथय धीरस्य यथा ते नारदाच्छ्रुतं || श्लोक 32 ||" प्रथम सर्ग | बालकाण्ड, वाल्मीकि रामायण ||

'मुनि श्रेष्ठ ! तुम श्रीराम के सम्पूर्ण चरित्र का वर्णन करो | परम बुध्धिमान भगवान श्रीराम संसार में सबसे बड़े धर्मात्मा और धीर पुरुष हैं | तुमने नारद जी के मुहं से जैसा सुना है, उसी के अनुसार उनके चरित्र का चित्रण करो |' ब्रह्मा जी ने प्रस्थान से पहले महर्षि को दिव्य दृष्टि प्रदान की, जिससे वे श्रीराम चरित्र से जुडी भूत, वर्तमान, और भविष्य की सभी घटनाओं को देख सकते थे | इस तरह ब्रम्हा जी के आशीर्वाद और प्रेरणा से महर्षि वाल्मीकि ने आदिकाव्य रामायण की रचना की जिसमें सम्पूर्ण श्रीराम चरित्र समाहित है |

रामायण में श्रीराम का जो चरित्र उभरकर आता है, वह एक मर्यादा पुरुषोतम और आदर्श पुरुष का है, जिनके जैसा विश्व के किसी अन्य सभ्यता, धर्म या देश में कोई दूसरा पुरुष नहीं हुआ- न मनुष्यों में, न देवताओं में | कालक्रम से श्रीराम का चरित्र ही आदर्श धर्म और नैतिकता का मानक बन गया|

श्रीराम के चरित्र में निहित गुण ही सच्चे मानवीय धर्म के आधार बन गए, जिनसे धर्म की परिभाषा निर्धारित की गयी | मानव धर्मशास्त्र में मनुष्यों के लिए उत्तम मानव धर्म के जिन दस लक्षणों का उल्लेख किया गया है, वे श्रीराम के ही चरित्र से लिए गए हैं |

"धृतिः क्षमा दमोस्तेयम शौचमिन्द्रियनिग्रहः |
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो, दशकं धर्मलक्षणम ||" मानव धर्मशास्त्र, 6.92 ||

अर्थ, " धृति अर्थात धैर्य, क्षमा, दम अर्थात अपनी इच्छाओं पर नियंत्रण करना, अस्तेय - चोरी नहीं करना, शौच शुचिता - अन्तःरंग एवं बहिरंग, इन्द्रिय निग्रह, धी - बुद्धिमत्ता का प्रयोग, विद्या - ज्ञान प्राप्ति, सत्य और अक्रोध - क्रोध से रहित होना | ये दस धर्म के लक्षण हैं |

धर्म की ठीक ऐसी ही परिभाषा महर्षि याज्ञवल्क्य ने भी दी है:
"अहिंसा सत्यमस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रह |
दानं दमो दया शांतिः सर्वेषा धर्म साधनम ||" याज्ञवल्क्य स्मृति, 1.122 ||

हिन्दू धर्म के अतिरिक्त जैन धर्मग्रन्थ "तत्त्वार्थ सूत्र" और बौद्ध धर्म के "दस शील सिध्हांत" का स्त्रोत भी श्रीराम चरित्र ही है |

इसके अतिरिक्त विश्व के अन्य धर्मों और मनीषियों द्वारा सच्चे मानव धर्म की जिन विशेषताओं का उल्लेख किया गया है, उन सबका मूल स्त्रोत श्रीराम का ही चरित्र है |
अतः श्रीराम का ही चरित्र सच्चे मानव धर्म का स्त्रोत है, वही उसको पारिभाषित करता है और इसका पोषक भी वही है |

फिर भी श्रीराम की विशेषता केवल उनके धर्मज्ञ और गुणवान होने में ही नहीं है| ये गुण तो किसी भी व्यक्ति में हो सकते हैं | इनकी सार्थकता तो तभी है, जब इनका उपयोग सृष्टि और मानव कल्याण के लिए हो, अन्यथा अपने आप में इन गुणों का कोई महत्व नहीं |

श्रीराम ने अपने गुणों और शक्तियों का उपयोग सच्चे मानव धर्म, उच्च नैतिक आदर्श, सौहाद्र और भाईचारे द्वारा देश और समाज में शांति, एकता और सामाजिक समरसता की स्थापना के लिए किया, वह भी अपने व्यक्तिगत आचरण द्वारा | इसीलिए वह सबसे अलग और महान हैं |

श्रीराम धर्म

श्रीराम ने धर्म का कोई उपदेश नहीं दिया, न ही किसी पंथ या मठ की स्थापना की | व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में उनका सहज, स्वाभाविक आचरण ही आदर्श मानव धर्म और नैतिकता का मानक बन गया |

रामायण में श्रीराम के चरित्र से धर्म का जो स्वरुप सामने आता है, वह एक भीरु, शक्तिहीन, सामाजिक सरोंकारों से उदासीन, नकारात्मक और निष्क्रिय व्यक्ति का नहीं, बल्कि एक पुरुषार्थी, तेजस्वी, निर्भीक, शक्तिशाली, न्याय प्रिय एवं सदा धर्म के रास्ते पर चलने वाले पराक्रमी पुरुष का धर्म है, जो लोक मंगल और लोक कल्याण की उदात्त भावना से प्रेरित है |

पुत्र धर्म

पितृभक्त राम

यह पुत्र धर्म ही था, जिसके पालन में श्रीराम एक ही रात में युवराज से संन्यासी बन जाते हैं| सहर्ष, बिना किसी शिकायत के |

चित्रकूट में भरत की प्रार्थना पर श्रीराम अयोध्या आकर राज्य ग्रहण कर लेते तो भी कुछ अनुचित नहीं होता | क्योंकि जिस माता ने उनको वन भेजा था अब वही उन्हें वापस चलने को कह रही थी | वह पिता भी नहीं रहे जिन्होंने कैकेयी को वर दिया था | जिस भाई को राज्य दिया गया था, वह स्वयं उन्हें राज्य समर्पित कर रहा था | वहां मौजूद ऋषियों, मुनियों, गुरुओं, माताओं और समस्त अयोध्या वासियों की भी यही इच्छा थी |

वास्तव में श्रीराम के लिए अयोध्या वापस आकर राज्य ग्रहण करने के मार्ग में अब कोई अवरोध नहीं था | लेकिन श्रीराम का धर्म किसी की इच्छा या तकनीकी आधारपर निर्भर नहीं था | उन्हें अपने धर्म की समझ विल्कुल स्पष्ट थी | माता, भ्राता, गुरुजन या अयोध्यावासी जो कहें, श्रीराम के लिए मृत पिता के आदेश का पालन करना ही सच्चा धर्म था, जिसका उन्होंने पालन किया |

इसीलिए भरत की प्रार्थना, माताओं, गुरुओं के आदेश और नगरवासियों के अनुरोध के बावजूद श्रीराम अपने धर्म पर चट्टान की तरह अडिग रहे | हाँ, अनुज भरत के प्रेम और भक्ति से विचलित हो उन्होंने अयोध्या का राज्य अवश्य स्वीकार कर लिया, लेकिन चौदह वर्षों का वनवास पूरा होने के बाद |

इस तरह श्रीराम ने माता-पिता के आज्ञा का पालन कर पुत्र धर्म, भरत का अनुरोध मानकर भ्राता धर्म और अयोध्या जैसे समृद्धिशाली राज्य का तिनके की तरह परित्याग कर त्याग और लोभ से रहित होने का महान आदर्श स्थापित किया |
आजकल अधिकतर लोगों के जीवन में दुख का कारण लोभ है | श्रीराम द्वारा स्थापित धर्म के मार्ग पर चलकर इन लोभ जनित दुखों से सहज ही मुक्ति पाई जा सकती है |

मातृभक्त राम

कैकेयी श्रीराम की सौतेली माता थीं, जिन्होंने उन्हें 14 वर्षों का वनवास दिया था, वह भी बिना किसी अपराध के | यह अन्यायपूर्ण और कठिन दंड की तरह था | किसी भी सामान्य व्यक्ति के लिए ऐसी सौतेली माता के प्रति क्रोध का भाव स्वाभाविक था, लेकिन श्रीराम के लिए नहीं | उनके मन में कैकेयी के प्रति कहीं भी, कभी भी कोई दुर्भावना नहीं दिखती |

यदा कदा जब लक्ष्मण क्रोध में कुछ बोलते भी हैं, तो श्रीराम उन्हें तुरंत ही झिड़क देते हैं | श्रीराम के लिए कैकेयी भी कौशल्या की ही तरह माता हैं, जिनके प्रति किसी भी प्रकार की दुर्भावना या अपशब्द श्रीराम को बर्दाश्त नहीं |

माता का आदेश था, वन में तपस्वी की तरह रहने का :
“तापस वेष विशेष उदासी | चौदह बरिस राम वनवासी ||” **रामचरित मानस, अयोध्या काण्ड।**

श्रीराम ने हमेशा माता के इस आदेश का पालन किया, अत्यंत कष्ट उठाकर भी |
श्रृंगवेरपुर में निषादराज का उनके महल में रहने और स्वादिष्ट राजसी भोजन का निमंत्रण ठुकराकर श्रीराम सीता और लक्ष्मण सहित कंद, मूल, फल खाते हैं, और भूमि पर घास की शैय्या पर रात्रि विश्राम करते हैं |

वैसे ही किष्किन्धा में भी श्रीराम न तो सुग्रीव के महल या नगर में जाते हैं, न ही अपने आराम और सुविधा के लिए कोई सामान या भोजन ही स्वीकार करते हैं | घनघोर बरसात के उन चार महीनों को वे केवल लक्ष्मण के साथ गुफा में पत्थर पर सोकर और कन्द, मूल, फल खाकर बिताते हैं |

इस तरह महान इक्ष्वाकु वंश के राजकुमार, सूर्य वंश के सबसे चमकीले सूर्य, महाराज दशरथ के पुत्र और अयोध्या के भावी समाट श्रीराम माता के आदेश पर चौदह वर्षों तक केवल वन में उगे कंद, मूल, फल खाकर ही जीवन यापन करते हैं, घासफूस के विस्तर पर ज़मीन पर सोते हैं, और वल्कल वस्त्र धारण करते हैं |

श्रीराम ये सारे कष्ट सहर्ष उठाते हैं, माता के प्रति बिना किसी क्षोभ या रोष के | इस तरह के धर्म पालन का अन्य दूसरा उदहारण पुरे विश्व में कहीं नहीं है |

वस्तुतः श्रीराम तो माता कैकेयी को अपने वनवास का दोषी ही नहीं मानते | उनके अनुसार यह सब दैव की इच्छा से हुआ जिसके लिए माता जिम्मेवार नहीं है | वे स्पष्ट कहते हैं :

“न लक्ष्मणास्मिन मम राज्यविघने, मा ता यवियस्यभिशंकिताव्या |
दैवाभिपन्ना न पिता कथंचि, जानासि दैवं हि तथाप्रभावम ||30|| सर्ग 22, वाल्मीकि रामायण, अयोध्या कांड ||

‘लक्ष्मण ! मेरे राज्याभिषेक में जो विघ्न आया है, इसमें मेरी सबसे छोटी माता कारण हैं, ऐसी शंका नहीं करनी चाहिए, क्योंकि वह दैव के अधीन थीं | इसी प्रकार पिता जी भी किसी तरह इसमें कारण नहीं है | तुम तो दैव और उसके अद्भुत प्रभाव को जानते ही हो, वही कारण है |’

यही नहीं, लंका विजय और सीता की अग्नि परीक्षा के बाद इन्द्रादि अन्य देवताओं के साथ जब महाराज दशरथ स्वर्गलोक से श्रीराम को आशीर्वाद देने आये और वर मांगने को कहा तो श्रीराम ने उनसे पुनः कैकेयी को पत्नी रूप में और भरत को पुत्र रूप में अपनाने की प्रार्थना की | महाराज भरत को तो पुत्र रूप में अपनाने को तुरंत तैयार हो जाते हैं, लेकिन कैकेयी को पत्नी के रूप में पुनः ग्रहण करने को तैयार नहीं होते | पर श्रीराम के बार बार अनुरोध करने पर अंततः उन्हें मानना ही पड़ा |

कंबन ने लिखा है कि लंका विजय के बाद श्रीराम अयोध्या पहुंचने पर सबसे पहले माता कैकेयी से ही मिलने जाते हैं, ताकि माता को श्रीराम के मन में उनके प्रति किसी दुर्भावना का संदेह न रहे | गोस्वामी तुलसीदास ने भी यही लिखा है |

“प्रभु जानी कैकेयी लजानी | प्रथम तासु गृह गए भवानी ||”
ताहि प्रबोधि बहुत सुख दीन्हां | पुनि निज भवन गमन हरी कीन्हा ||” रामचरित मानस, उत्तरकाण्ड ||

हालाँकि माता के आदेश पालन में बहुत कष्ट और दुःख था लेकिन श्रीराम ने उनकी आज्ञा का अक्षरशः पालन किया | यह श्रीराम का माता के प्रति आदर और आज्ञा पालन का आदर्श है |

आजकल हम अक्सर ही संतानों द्वारा माता-पिता के अपमान की बातें पढ़ते और सुनते हैं | अपने परिजनों और सुहृदों से भी दुर्व्यवहार लगभग आम बात हो गयी है | यह प्रवृति सभी के लिए गंभीर मानसिक व्याधियों का कारण बन गयी है | श्रीराम की तरह अपने माता - पिता और परिजनों के प्रति सद्व्यवहार से इन व्याधियों से सहज ही मुक्ति पाई जा सकती है |

पौरुष धर्म

वीर पुरुष के धर्म की परीक्षा विपत्तियों में होती है | श्रीराम घोर विपत्तियों और विषम परिस्थियों में भी धर्म का त्याग नहीं करते, अपने प्राण और प्रियजनों के त्याग के मूल्य पर भी |

वन में पत्नी का अपहरण होने पर वे भाई भरत, श्वसुर राजा जनक, अपनी ननिहाल या किसी अन्य राजा से सेना की मदद नहीं मांगते | न तो वे आश्रम या मंदिर में बैठकर मन्त्रों का जाप करते हैं, न ही तपस्या और दैवी शक्तियों की मदद लेते हैं | वे विपत्तियों को पूर्वजन्म के कर्मों का परिणाम मानकर दैव के भरोसे भी नहीं बैठते, न ही अगले जन्म में अच्छे फल के लिए जप-तप का सहारा लेते हैं |

श्रीराम एक वीर, पराक्रमी पुरुष की तरह अपनी पत्नी की रक्षा के लिए पुरुषार्थ का असाधारण उद्योग करते हैं | वन-वन घूमते वानर, भालुओं की सेना गठित करते हैं, और महाबलशाली, दिग्विजयी, लंकापति रावण का पुत्रों और भाइयों सहित समूल नाश कर अपनी पत्नी को छुड़ा लाते हैं |

इस महा उद्योग में पत्नी को छुड़ाने के अतिरिक्त राक्षसों के त्रास और अन्याय से मुक्त समाज की स्थापना का लोक कल्याणकारी उद्देश्य भी निहित था | यह है श्रीराम का धर्म, त्याग और पौरुष से भरा, सत्य एवं धर्म की रक्षा और अन्याय के विरुद्ध लड़ने को हमेशा कटिबद्ध |

इसी तरह युद्ध में मूर्छित लक्ष्मण की चिकित्सा करने के राम के अनुरोध पर रावण के राजवैद्य सुषेण भी धर्म का प्रश्न उठाते हैं |

“मैं वैद्य दशानन के घर का, किस तरह आपका कार्य करूं ?
अनुचित होगा दशकंधर को, यदि वैरी को आराम करूं |” || राधेश्याम रामायण, लंका कांड ||

‘हे श्रीराम ! मै रावण का वैद्य हूँ, उनका नमक खाता हूँ | आप रावण के शत्रु हैं | आपका उनसे युद्ध चल रहा है | ऐसी स्थिति में आपकी मदद करना अपने स्वामी के साथ मेरा विश्वासघात होगा | अतः आप ही बताइए कि इन परिस्थतियों में मैं विश्वासघात का यह घोर अधर्म कैसे करूं ?’

कठिन प्रश्न था | एक तरफ भाई के प्राण तो दूसरी तरफ धर्म | किसी और व्यक्ति के लिए यह भारी धर्म संकट का प्रश्न था, पर श्रीराम के लिए नहीं | वैद्यराज को उनका उत्तर स्पष्ट था :-

“जिस धर्म पे सारा राज्य गया, श्री पितृदेव का मरण हुआ |
जिस धर्म पे भाई भरत छुटा, सीता प्यारी का हरण हुआ |
उस धर्म हेतु प्रिय लक्ष्मण भी, यदि मर जाये तो मर जाये |
आवाज़ यही होगी अपनी, प्रिय धर्म नहीं जाने पाये | ” || राधेश्याम रामायण, लंका कांड ||

‘हे वैद्यराज ! अगर लक्ष्मण की चिकित्सा करने से आपके धर्म की हानि होती है, तो आप कदापि ऐसा न करें, क्योंकि प्रिय लक्ष्मण की मृत्यु तो मुझे स्वीकार है, पर धर्म का त्याग नहीं | कोई भी लोभ या मोह श्रीराम को धर्म की राह से विचलित नहीं कर सकता |’

यही नहीं, युद्ध क्षेत्र में रावण जैसे दुर्धर्ष शत्रु को शस्त्रहीन कर श्रीराम ने यह कहते हुए छोड़ दिया था कि निहत्थे शत्रु पर प्रहार करना धर्म विरूद्ध है |

“प्रयाहि जानामि राणा दिर्तस्तवं,प्रविश्य रात्रिचरराज लंकाम |
अश्वस्य निर्याहि रथी च धन्वी, तदा बलं प्रेक्ष्यसी मे रथस्य || 143 || सर्ग 59, वाल्मीकि रामायण, लंका कांड ||

“निशाचरराज ! मैं जानता हूँ, तू युद्ध से पीड़ित है | इसलिए आज्ञा देता हूँ, जा लंका में प्रवेश करके कुछ देर विश्राम करले | फिर रथ और धनुष के साथ निकलना | उस समय रथारूढ़ रहकर तुम फिर मेरा बल देखना |”

इस तरह जीवन मृत्यु के उस निर्णायक युध्ह में भी श्रीराम अपने धर्म का त्याग नहीं करते | युध्हक्षेत्र में शत्रु को शस्त्र विहीन कर जीवन दान देने का यह विश्व में अपने तरह का एकमात्र उदहारण है |

शक्ति धर्म

शक्ति का सही उपयोग दुर्बल, निरीह की रक्षा, अन्याय का प्रतिकार और अन्यायी का नाश करना है | श्रीराम के चरित्र की यह एक विशिष्टता है | दंडक वन में राक्षसों द्वारा मारे गए निर्दोष ऋषियों एवं ब्राहमणों के हड्डियों के ढेर को देखकर उन्होंने पृथ्वी को राक्षसों के आतंक से मुक्त करने की प्रतिज्ञा की |

"निसिचर हीन करऊँ महि, भुज उठाई प्रण कीन्ह |
सकल मुनिन्ह के आश्रमन्हीं, जाई जाई सुख दीन्ह || 9 ||" श्रीरामचरितमानस || अरण्य कांड ||

"तपस्विना रणे शत्रून हन्तुमिच्छामि राक्षसान |
पश्यन्तु वीर्यमृषयः सभ्रातुर्मे तपोधनः||श्लोक 25|| सर्ग 6, वाल्मीकि रामायण, अरण्य कांड ||

'तपोधनो ! मैं तपस्वी मुनियों से शत्रुता रखने वाले उन राक्षसों का युद्ध में संहार करना चाहता हूँ | आप सब महर्षि भाई सहित मेरा पराक्रम देखें|'

श्रीराम की राक्षसों के वध की प्रतिज्ञा पर सीता को कुछ आपत्ति होती है | वे कहती हैं कि तपस्वी होकर श्रीराम को अनायास ही राक्षसों का वध नहीं करना चाहिए, क्योंकि हिंसा तापस धर्म के विरूद्ध है | श्रीराम सीता को अपने क्षात्र धर्म और ऋषियों की प्रार्थना का उल्लेख करते हुए प्रतिज्ञा पूरी करना अपना धर्म बताते हैं, चाहे उन्हें इसके लिए कोई भी मूल्य देना पड़े | वे सीता से स्पष्ट कहते हैं:

"अप्यहम् जीवितं जह्याम त्वां वा सीते सलक्ष्मणाम,
न तु प्रतिज्ञा संश्रुत्य ब्रहानेभ्यो विशेषतः || 18 ||" वाल्मीकि रामायण, अरण्य कांड, दशम सर्ग |

अर्थात- 'हे सीते ! मै अपने प्राण छोड़ सकता हूँ, तुम्हारा और लक्ष्मण का परित्याग भी कर सकता हूँ, किन्तु ब्राह्मणों और ऋषियों की रक्षा करने की अपनी प्रतिज्ञा को कदापि नहीं तोड़ सकता |'

यह है एक वीर पुरुष श्रीराम का सच्चा धर्म | अपनी शक्ति का लोक कल्याण और निर्दोषों तथा निर्बलों की रक्षा के लिए उपयोग | निर्बलों पर अत्याचार करने और उन्हें सताने के लिए नहीं |

शांति के अग्रदूत

हर तरह से सक्षम और सामर्थ्यवान होते हुए भी श्रीराम के लिए युध्ह अंतिम विकल्प था | अपने व्यक्तिगत लाभ या मात्र शक्ति प्रदर्शन के लिए उन्होंने कभी शस्त्र नहीं उठाया | उनके महान धनुष पर वाण तभी चढा जब किसी निर्बल, निर्दोष की रक्षा करनी हो, अन्याय का प्रतिरोध करना हो, आत्मरक्षार्थ हो या किसी अत्याचारी का नाश करना हो |

इसीलिए रावण के साथ युद्ध टालने के लिए श्रीराम ने ठीक युध्ह से पहले युवराज अंगद को शांतिदूत बनाकर भेजा कि सीता को लौटा दो और श्रीलंका तथा राक्षस जाति को विनाश से बचा लो, पर रावण नहीं माना |

स्थितप्रज्ञ श्रीराम ने विषम परिस्थितियों में भी कभी अपना संयम नहीं खोया | जब युवराज से एक ही रात में वनवासी बना दिए गए तब भी नहीं |

पुरे रामायण में केवल एक प्रसंग ऐसा है, जहाँ श्रीराम को रोष आता है | मार्ग के लिए तीन दिन की लगातार प्रार्थना के बावजूद जब समुद्र नहीं सुनता तब वे शस्त्र संधान करते हैं | बाद में समुद्र की प्रार्थना पर वे उसे क्षमा भी कर देते हैं, क्योंकि समुद्र को हानि पहुँचाना या अकारण शक्ति का प्रदर्शन करना श्रीराम का उद्देश्य नहीं था | श्रीराम का उद्देश्य हर समस्या का समाधान शांतिपूर्ण तरीके से निकालना था |

आज विश्व में अशांति का दौर है | देशों और समुदायों के बीच लोभ, व्यक्तिगत स्वार्थ और अहंकार वश बात बात पर कलह और हिंसा हो रही है | परिणाम स्वरुप उपजी अशांति, असुरक्षा और अभाव ने लोगों का जीवन दुखमय कर दिया है | इन सभी दुखों से मुक्ति का एकमात्र उपाय श्रीराम के दिखाए शांति पथ पर चलना है |

धर्मो रक्षति रक्षितः

धर्म के रास्ते पर चलते हुए श्रीराम को विजय मिली | महर्षि व्यास ने श्रीराम चरित्र को ही ध्यान में रखते हुए लिखा, 'धर्मो रक्षति रक्षितः |' अर्थात जो धर्म की रक्षा करता है, धर्म उसकी रक्षा करता है, या धर्मपथ पर चलने वाले की सदा जय होती है |

इसका आशय यह है कि जीवन में सुख, शांति और समृद्धि की कामना पूर्ति धर्म के रास्ते पर ही चलकर हो सकती है | सभी शारीरिक, मानसिक व्याधियों से मुक्ति का मार्ग भी यही है | यह एक शाश्वत सत्य है, जिसका कोई अपवाद नहीं | नाना प्रकार के व्याधियों एवं विकारों से ग्रस्त समाज और व्यक्तियों के लिए श्रीराम के धर्म का यह मूल सन्देश आज से ज्यादा प्रासंगिक, शायद पहले कभी नहीं था, और आगे भी रहेगा इसमें कोई संदेह नहीं |

अनेकता में एकता

प्राचीन काल से ही सांस्कृतिक विविधता भारत की अनूठी विशेषता रही है । विभिन्न तरह की सभ्यताओं, अनगिनत भाषाओं, दर्जनों पूजा पध्धतियों, धार्मिक विश्वासों, पंथों, भोज्य पदार्थ, पेय पदार्थ, रंग विरंगे वस्त्रों, आभूषणों, विभिन्न तरह के मौसम, मिटटी, वनस्पतियाँ, फसलें, पेड़, पौधे, पशु, पक्षी, गीत, संगीत आदि से भरा उपमहाद्वीप के आकार का भारत जैसा विविधताओं से भरा और कोई दूसरा देश पृथ्वी पर नहीं है |

इस सांस्कृतिक विविधता की सभी विशेषताओं को अक्षुण्ण रखते हुए कन्याकुमारी से हिमालय तक के सम्पूर्ण भू- भाग को एकता के सूत्र में पिरोना हमारे महान ऋषियों एवं संतों का पवित्र उद्देश्य रहा है।

असंभव प्रतीत होने वाले इस कार्य को श्रीराम ने पूरा किया | भारत की 'अनेकता में एकता' जैसे अमूर्त विचार के जनक और शिल्पी श्रीराम ने इसे मूर्त रूप देकर देश को एकता के सूत्र में बांधा और ऐसा करते हुए उन्होंने मानव जाति के लिए एक स्थायी विरासत छोड़ी |

श्रीराम ने यह असाधारण उपलब्धि सेना और हथियारों के बल पर नहीं, बल्कि तपस्वी के रूप में, हजारों किलोमीटर पैदल चलते हुए, प्रेम, मित्रता, भाईचारा और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व जैसे अविनाशी हथियारों से ह्रदय जीतकर हासिल की।

इस वैविध्य पूर्ण भारत की एकता की ठोस नींव श्री राम ने अपने स्नेहपूर्ण हाथों से, बड़े यत्न से रखी। उन्होंने भारत और उसके लोगों की देखभाल और उनका पालन-पोषण वैसे ही किया, जैसे एक माली अपने पौधों की करता है, हर पौधे की, समान रूप, से बिना किसी भेद भाव के |

उपलब्ध अभिलेखों के अनुसार श्रीराम भारत के पहले राजपुरुष हैं, जो उत्तर से दक्षिण भारत गए, विन्ध्याचल पर्वत को लाँघ कर, वह भी पैदल, तपस्वी की तरह बिना किसी सेना के | श्रीराम किसी सम्राट, राजा या सेनापति की तरह नहीं वरन प्रेम, शांति, भाईचारा और सामाजिक समरसता के अग्रदूत के रूप में गए | वे जहाँ भी गए लोगों को जोड़ते गए, उन्हें अपना बनाते गए |

श्रीराम वन में जाकर निम्न कुल में जन्मे निषादराज गुह को सखा बनाते हैं, एक पक्षी, गृद्धराज जटायु को पितृवत आदर दे उनका श्राद्ध करते हैं, वनवासियों से मित्रवत व्यवहार करते हैं, सुदूर दक्षिण जाकर भीलनी शबरी को माँ का आदर देते हुए उनके जूठे बेर खाते हैं, तथा वानर सुग्रीव और राक्षस विभीषण को परम मित्र बनाकर उनका राजतिलक करते हैं, और ऐसा करते हुए वे सम्पूर्ण भारत को, उत्तर से दक्षिण तक, एकता के सूत्र में पिरो देते हैं |

यह एक अभूतपूर्व कार्य था, क्योंकि विश्व के किसी भी देश, धर्म या सभ्यता में किसी भी इंसान या देवता द्वारा इतने बड़े पैमाने पर, इतना विशाल कार्य इतनी शांति से, बिना खून बहाए नहीं किया गया है।

आज के कई उन्नत देशों, संस्कृतियों और सभ्यताओं का उदय और एकीकरण आधुनिक काल की घटनाएँ हैं, वह भी बहुत खून-खराबे के बाद।

इनमें से कई देशों में नयी सभ्यता और संस्कृतियों का निर्माण पुरानी संस्कृतियों के ध्वंस की राख पर, उनका नामोनिशान मिटाकर किया गया | इंका, माया, मेसोपोटामिया, मिस्र, बेबिलोन, रोमन, यूनान आदि जैसी कुछ महान सभ्यताओं के नाम जेहन में आते हैं, जो कभी उन्नत और गौरवशाली थीं, पर अब इतिहास बन चुकी हैं |

याद आती हैं मेसोपोटामिया (राजधानी बेबिलोन, आधुनिक इराक) के महान सम्राट नेबुचाद्नेज़र की, जिन्होंने ईसा पूर्व 587 शताब्दी में येरुसलम को, और यूनान के विश्व विजेता सम्राट सिकंदर की, जिसने ईसा पूर्व 330 शताब्दी में ईरान की राजधानी समृध्धिशाली पर्सिपोलिस सहित कई शहरों, गांवों को जलाकर राख कर दिया, हजारों निर्दोष स्त्री पुरुषों को मौत के घाट उतार दिया, बंदी बना लिया या देशनिकाला दे दिया | लेकिन अंतहीन हिंसा और मारकाट के कारण दोनों ही सभ्यताओं का अंत हो गया, दुनिया से नामो निशान मिट गया |

इनके विपरीत भारत की प्राचीन संस्कृतियां, रीति-रिवाज, भाषाएं, भोजन, वस्त्र, रहन-सहन की आदतें, सभी अभी तक, ज्यों की त्यों, मूल रूप में, हजारों सालों से लगातार चली आ रही हैं, गंगा की तरह बहती, निरंतर, निर्बाध, स्वछन्द, अपनी सम्पूर्ण गरिमा और वैभव के साथ | यह सब हुआ श्रीराम की शांति, प्रेम, भाईचारा और परस्पर सह- अस्तित्व की नीतियों के कारण |

भारत की एकता को स्थायी रूप देने के लिए श्रीराम ने जिस राजनीतिक ढांचे का निर्माण किया और जिन परम्पराओं की नींव डाली वे उनकी राजनीतिक सूझ - बुझ और दूरदर्शिता की परिचायक हैं | उसी नींव पर आज भारत सहित विश्व के अनेक देशों की राजनीतिक एकता की ईमारत खड़ी है |

श्रीराम ने राज्यों को जीतकर उन्हें अयोध्या के साम्राज्य का हिस्सा नहीं बनाया | उन राज्यों की गद्दी पर उन्होंने अपने भाइयों को भी नहीं बिठाया, न ही उनपर शासन करने के लिए कोई प्रशासक नियुक्त किया | किसी भी तरह का कर, शुल्क या उपहार भी नहीं लिया | सबको अपना शासन अपनी प्रणालियों और परम्पराओं के अनुसार चलाने की पूर्ण स्वतंत्रता थी |

यही नहीं उनके रीति रिवाजों और सांस्कृतिक परम्पराओं में भी न हस्तक्षेप किया, न ही अपनी परम्पराओं और सांस्कृतिक मूल्यों को उनपर लादने की कोशिश की | श्रीराम ने ऐसा कुछ नहीं किया | सभी से उनके संबंधों का आधार केवल मित्रता, बराबरी और आपसी सौहाद्र रहे | यह बात अलग है कि उनके व्यक्तिगत, सामाजिक आचरण ने सभी सभ्यताओं और संस्कृतियों को गहरे रूप से प्रभावित किया |

आज भारत सहित अमेरिका आदि देशों में एक केंद्र सरकार और अनेक स्वायत्त शासित राज्य हैं, जिन्हें स्थानीय स्तर पर शासन चलाने में पूर्ण स्वतंत्रता है | पूरी विश्व सभ्यता में श्रीराम से पहले इस प्रकार के किसी राजनीतिक सगठन का कहीं कोई उल्लेख नहीं है |

इस तरह श्रीराम ने दिखा दिया कि शांति और प्रेम से प्राप्त की हुई एकता ही चिरस्थायी होती है, न कि शस्त्रों के बल से ? शस्त्रों से भू- भाग जीते जा सकते हैं, ह्रदय नहीं |

राष्ट्रों की एकता, अखंडता और सामाजिक समरसता के लिए शांति, सौहाद्र तथा प्रेम का श्रीराम का यह अमर सन्देश आज सम्पूर्ण मानवता और विश्व की अमूल्य विरासत है |

विश्व सभ्यता पर प्रभाव

जीवन के हर क्षेत्र में कर्तव्य के औचित्य निर्धारण में नैतिकता का कसौटी की तरह उपयोग मानव सभ्यता को श्रीराम की अनुपम देन है | उनकी इस मूल संकल्पना ने विश्व की सभी सभ्यताओं को निरपवाद रूप से प्रभावित किया है |

भारत में बौद्ध और जैन धर्मों के अतिरिक्त इसाई और इस्लाम धर्म पर भी इसकी छाप स्पष्ट है | प्राचीन काल से ही भारत का रोम, यूनान, मिस्र, मेसोपोटामिया, चीन, अरबों और दक्षिण पूर्व एशिया के देशों से गहन व्यापारिक सम्बन्ध रहे हैं | वस्तुओं के साथ वैचारिक आदान प्रदान की स्वाभाविक प्रक्रिया में रामकथा, विशेषतः उसके नैतिक पक्ष ने उन देशों और धर्मों के मानवीय पक्ष के विकास पर गहरा प्रभाव डाला है |

उन्हीं के प्रभाव के कारण इसाई धर्म में करुणा, दया, क्षमा और यूनान में 'एथिक्स' का विकास होता है, जो उस भूमि की उपज या मूल संकल्पना नहीं हैं | वहां की उपज तो जूलियस सीजर और सिकंदर जैसे महत्वाकांक्षी विजेता थे, जिनका लक्ष्य किसी भी तरह सत्ता और सम्पत्ति हासिल करना था, जिसके लिए उन्होंने लाखों की जान ले ली और हजारों गाँवों, शहरों को ध्वस्त कर दिया |

मध्य एशिया और दक्षिण पूर्व के देशों पर प्राचीन भारतीय संस्कृति और सभ्यता के प्रभाव जगजाहिर हैं | इनमें चीन, जापान, मलेशिया, इंडोनशिया, वियतनाम, कम्बोडिया, फिलिपिन्स, श्रीलंका, तिब्बत, थाईलैंड और म्यांमार प्रमुख हैं | न केवल इन देशों में श्रीराम कथा पर आधारित स्वतंत्र रामायण या पुस्तकें लिखी गयी हैं, श्रीराम से संबन्धित भव्य मंदिरों का भी बड़े पैमानों पर निर्माण हुआ है |

इस्लाम पर प्रभाव

इस्लाम पर भी इसकी छाप स्पष्ट है | पैगम्बर मुहम्मद साहब के जन्म के पहले से ही भारत के अरब देशों से व्यापारिक सम्बन्ध थे | भारत का दर्शन और ज्ञान उन देशों के ज्ञान, विज्ञान, साहित्य और वैचारिक परम्परा को प्रभावित करते रहे हैं, जिनकी झलक वहां के प्राचीन साहित्य में साफ दिखती है | रामायण, महाभारत, पंचतंत्र, कथा सरित्सागर आदि ग्रंथों की कहानियों ने वहां के वैचारिक और सांस्कृतिक सोच पर गहरा प्रभाव डाला है | न केवल इन ग्रंथों के अनुवाद उनकी भाषाओं में किये गए, कई मौलिक ग्रंथों की रचना भी इनकी तर्ज़ पर हुई |

मैं यहाँ प्राचीन के बजाय एक अत्यंत आधुनिक उदाहरण का उल्लेख करना चाहूँगा कि किस तरह श्रीराम का चरित्र आज भी इस्लाम को प्रभावित कर रहा है |

RESURRECTION, ERTUGRUL BAY' नाम का तुर्की में बना एक टीवी सीरियल आजकल मुस्लिम एवं इसाई देशों में बहुत लोकप्रिय हुआ है | टीवी के अतिरिक्त 'यू ट्यूब' पर इसे देखने वालों की संख्या अरबों में है | इस सीरियल में 13 वीं शताब्दी के तुर्की के एक कबीले सरदार एर्तुग्रुल की कहानी है, जिसके पुत्र उस्मान के नाम पर आगे चलकर आटोमन साम्राज्य की स्थापना हुई |

इस सीरियल में मानव चरित्र की अच्छाइयों को दिखाया गया है, जो इसकी प्रसिध्धि का मुख्य कारण है | पर मुस्लिम देश में, मुस्लिम धर्म पर बना यह पूरा सीरियल आश्चर्यजनक रूप से श्रीराम की कहानी और रामायण का प्रतिरूप लगता है | अगर पात्रों के नाम, वेश भूषा, भाषा और स्थान आदि बदल दियें जाएँ तो यह सीरियल एकदम रामायण की तरह लगेगा |

श्रीराम की तरह सीरियल के नायक एर्तुग्रुल के भी चार भाई हैं | माता पिता का परम भक्त एर्तुग्रुल भी वचन का पक्का और महान योध्हा है, जो निर्बल, निर्धन और असहायों की रक्षा करने और न्याय के लिए लड़ते हुए बहुत कष्ट उठाता है | श्रीराम की तरह धर्म, न्याय और नैतिकता की रक्षा के लिए वह कुछ भी करने को तैयार रहता है, अपने प्राण और प्रिय भाइयों को त्यागने के मूल्य पर भी, एकदम श्रीराम की तरह |

सीरियल में कैकेयी भी हैं | सुल्तान की तीन पत्नियों में एक, सबसे छोटी अपने पति को ज़हर देकर मार डालती है, ताकि उसका पुत्र सुल्तान बने | भरत की तरह उस पुत्र को भी यह बात अच्छी नहीं लगती और वह अपनी माँ का त्याग कर देता है |

रामायण के ऋषियों की तरह उसमें भी एक संत शेख अल अराबी हैं, जो एर्त्रुगुल के गुरु हैं और सबको सत्य और न्याय की राह पर चलने की शिक्षा देते रहते हैं |

रामायण में जहाँ श्रीराम राक्षसों एवं रावण से लड़ते हैं, एर्तुग्रुल को भी लगातार एक तरफ मंगोल तो दूसरी तरफ ईसाई क्रुसेडर्स से लड़ना पड़ता है | तमाम विपत्तियाँ झेलकर भी धर्म और सच्चाई की राह पर चलते हुए श्रीराम की तरह अंततः जीत एर्तुग्रुल की ही होती है |

जिस तरह रामायण में राजा दशरथ की तीन रानियाँ हैं, और श्रीराम एक पत्नीव्रती हैं | उसी तरह इस सीरियल में भी सुल्तान की तीन पत्नियाँ हैं, बाकी एर्तुग्रुल सहित सभी के केवल एक |

यह तथ्य इस्लाम में प्रचलित और स्वीकृत बहुपत्नीवाद की प्रथा से मेल नहीं खाता | रामायण की कहानी से इतना साम्य केवल एक संयोग नहीं, वरन श्रीराम के चरित्र के प्रभाव के कारण है |

छः भाषाओँ और 500 एपिसोड्स में बने इस महा सीरियल को मैंने लगातार चार पांच महीनों में कई बार रातभर जाग कर देखा और इस पर मैं श्रीराम के जीवन और रामायण का प्रभाव देखकर हैरान था |

हैरान था मैं, यह देखकर कि श्रीराम का चरित्र, धर्म, न्याय तथा नैतिकता के प्रति उनका आग्रह, हजारों साल बाद, आज भी विश्व में सभ्यताओं को किस तरह प्रभावित कर रहा है, उनको भी जिनकी विचारधारा, संस्कार और स्थापनाएं कई मामलों में हमसे भिन्न हैं |

श्रीराम के शांति संदेश का ही यह प्रभाव था कि भारत में धर्म के नाम पर एक बूंद भी खून नहीं बहा, न ही कोई जान गयी, जब कि इस्लाम और इसाई जगत ने धर्म के नाम पर खून की नदियाँ बहा दीं, लाखों की बलि दे दी |

आधुनिक काल में भी महात्मा गाँधी, मार्टिन लूथर किंग (जूनियर), नेल्सन मंडेला, दलाई लामा और डेस्मंड टूटू जैसे नेताओं द्वारा विश्व शांति की दिशा में किये गए प्रयास श्रीराम द्वारा स्थापित नैतिक आदर्शों, शांति और सौहाद्र के संदेशों से ही प्रेरित रहे हैं |

सत्य तो यह है कि शांति, प्रेम और सच्चे मानव धर्म के प्रति कटिबद्ध श्रीराम जैसा पुरुष विश्व की किसी भी सभ्यता, धर्म या देश में नहीं हुआ | मानवीय क्रिया कलाप के हर क्षेत्र में उच्चतम शिखर पर स्थित उनका व्यक्तित्व और उनके द्वारा स्थापित नैतिक आचरण के उच्च आदर्श आज भी आकाश में स्थित अचल ध्रुवतारे की तरह चमकते हुए, निरंतर, मानवता को सच्चाई की राह दिखा रहे हैं|

श्रीराम का चरित्र हमारे सामाजिक जीवन का ऐसा संविधान है, जिसमें हजारों वर्षों बाद भी किसी संशोधन की आवश्यकता नहीं पड़ी । आज भी पुत्र, भाई, पति, शिष्य, राजा, मित्र, रक्षक, सहयोगी और यहाँ तक कि शत्रु के रूप में भी राम का ही चरित्र आदर्श है | इन सभी रूपों में आज भी उनसे किसी श्रेष्ठ पुरुष की कल्पना नहीं की जा सकती |

आदिकाल से ही मनुष्य की मूल प्रवृति सुख और शांति के साथ परिवार सहित समाज में सम्मान जनक जीवन बिताने की रही है | आज भी उसके सारे उद्योगों के पीछे यही प्रवृति काम करती है | आगे भी जबतक मनुष्यों में सुख और शांति की यह चाह जीवित रहेगी, तबतक श्रीराम की प्रासंगिकता भी बनी रहेगी और उनके द्वारा स्थापित शाश्वत नैतिक मूल्य और शांति का सन्देश आने वाले युगों युगों तक मानवता को सच्ची राह पर चलने की प्रेरणा देते रहेंगे |



कनक महल, अयोध्या

जय श्री राम

पूर्व पीठिका

कार्यक्रम

चरण 1	सिद्धाश्रम खंड					
दिनांक	प्रस्थान स्थान	प्रस्थान समय	आगमन स्थान	आगमन समय	दूरी (किमी)	अवधि (घंटे)
16.02.22 बुधवार	बड़ौरा: अखंड रामायण पाठ					
17 .02 .22 गुरुवार	पूजा , मां मुंडेश्वरी का दर्शन और आशीर्वाद प्राप्ति					
17.02 .22 गुरुवार	बड़ौरा	8.00	बक्सर	9.45	55.00	1.45
18 .02 .22 शुक्रवार	बड़ौरा	8.00	वाराणसी	10.30	137.00	3.00
	वाराणसी में विश्वनाथ मंदिर और काल भैरव का दर्शन					
18 .02 .22 शुक्रवार	वाराणसी	13.30	अयोध्या	18.30	219.00	05+01
18 & 19 .02 .22	अयोध्या में रात्रि विश्राम । राम से संबंधित स्थानों का दर्शन । दो रातें।					

बड़ौरा

बिहार और उत्तर प्रदेश की सीमा पर कर्मनाशा नदी के किनारे स्थित यह अत्यंत मनोहर गाँव मेरी जन्मभूमि है |

18 फ़रवरी, शुक्रवार के दिन प्रातः 08.00 बजे वाराणसी के लिये यात्रा यहीं से प्रस्थान करेगी |

मुंडेश्वरी धाम मंदिर

बिहार के कैमूर जनपद मुख्यालय भभुआ के निकट स्थित माँ मुंडेश्वरी का यह मंदिर अत्यंत पवित्र एवं भारत के सबसे प्राचीन मंदिरों में एक है | इसका निर्माण प्रथम शताब्दी में हुआ था | भूरे पत्थरों से निर्मित यह अष्टकोणीय मंदिर आरंभिक नागर शैली का उत्कृष्ट उदहारण है |

मंदिर में माँ शक्ति की प्रतिमा के साथ शिवलिंग भी स्थापित है| ऐसी मान्यता है कि एक स्त्री, राक्षसी ताड़का के वध के बाद भगवान श्री राम ने दोष निवारण लिए सिध्हाश्रम (बक्सर) से यहाँ आकर मां शक्ति की पूजा कर उनसे आशीर्वाद लिया था |

इस मंदिर की एक बड़ी विशेषता यहाँ की बलि प्रथा है, जो पूर्णतः अहिंसक और पशुओं का वध किये बिना होती है | नवरात्रों में यहाँ बड़ी संख्या में श्रध्हालु आते हैं, और मेला भी लगता है |

बक्सर (सिद्धाश्रम)

उत्तर वाहिनी गंगा नदी के पूर्वी तट पर बिहार राज्य स्थित आधुनिक बक्सर भारत में हिन्दुओ का सबसे पवित्र स्थल है| बाल्मीकि रामायण, बालकाण्ड के 29 वें सर्ग में सिद्धाश्रम (बक्सर) की महिमा का वर्णन विस्तार से किया गया है | अत्यंत पवित्र होने के कारण साक्षात् श्री विष्णु ने तपस्या करने के लिए सम्पूर्ण पृथ्वी पर इसी जगह को चुना जहाँ लंबी तपस्या के बाद उन्हें सिद्धि प्राप्त हुई थी | उनको सिद्धि मिलने के कारण ही महर्षि कश्यप ने उन्हें आशीर्वाद देते हुए इस जगह का नाम सिद्धाश्रम रखा |

अयं सिध्हाश्रमो नाम प्रसादात ते भविष्यति |
सिध्हे कर्मणि देवेश उतिष्ठ भगवन्नित: || 18 ||' बाल्मीकि रामायण, बालकाण्ड, 29वां सर्ग |
हे देवेश्वर ! भगवन ! आपकी कृपा से यह स्थान सिद्धाश्रम के नाम से विख्यात होगा | अब आपको तपस्या में सिद्धि मिल गयी है ; अतः यहाँ से उठिए |

'सिद्धाश्रम इति ख्यातः सिद्धो ह्यत्र महातपाः || 4 || बाल्मीकि रामायण, बालकाण्ड, 29वां सर्ग |
इसकी सिद्धाश्रम नाम से प्रसिद्धि थी; क्योंकि यहाँ महातपस्वी विष्णु को सिद्धि प्राप्त हुई थी |
सिध्हाश्रम ही वह जगह है जहाँ विष्णु नें देवताओं के अनुरोध पर वामन अवतार लिया था |

'अथ विष्नुर्महातेजा आदित्यां समजायत |
वामनं रूपमास्थाय वैरोचनिमुपगामत || 19 ||
वाल्मीकि रामायण, बालकाण्ड 29 वां सर्ग |
'तदनंतर महातेजस्वी भगवान विष्णु अदितिदेवी के गर्भ से प्रकट हुए और वामन रूप धारण करके विरोचन कुमार बलि के पास गये |'

अपने देव रूप में भगवान विष्णु के पृथ्वी पर कहीं और निवास करने का कोई उल्लेख नहीं मिलता |

साक्षात् विष्णु और वामन भगवान के निवास के कारण महर्षि विश्वामित्र ने भी अपनी तपस्या और यज्ञों की सिद्धि के लिए सिध्हाश्रम को ही चुना | ऐसा माना जाता है कि ऋग्वेद के तीसरे मंडल और पवित्र गायत्री मंत्र की रचना उन्होंने यहीं की थी |

लंकापति रावण ने भी सिध्हाश्रम के धार्मिक और सामरिक महत्व को समझते हुए यहाँ एक सैन्य चौकी की स्थापना कर रखी थी | महर्षि विश्वामित्र की प्रेरणा से ताड़का, सुबाहु आदि राक्षसों का सेना सहित नाश और चौकी का विध्वंस करने के साथ ही प्रभु श्रीराम ने पृथ्वी को राक्षस विहीन करने के अपने महायज्ञ की शुरुआत भी यहीं से की थी |

यहाँ के दर्शनीय स्थलों में गंगा का रामरेखा घाट, विश्वामित्र आश्रम और चरित्र वन प्रसिद्द हैं | मकर संक्रांति के दिन यहाँ गंगा स्नान का बड़ा महत्व है, जब दूर दूर से बड़ी संख्या में श्रध्हालु यहाँ इकठा होते हैं

यात्रा सम्बन्धी आवश्यक सूचना

1. पूरी यात्रा सड़क मार्ग से होगी।
2. यात्रा में कोई भी शामिल हो सकता है। लेकिन इस मामले में संयोजक का निर्णय अंतिम होगा।
3. यात्रा में शामिल होने वाले प्रत्येक यात्री को अपने वाहन, भोजन एवं ठहरने का इन्तजाम स्वयं करना होगा। अपने जान-माल की सुरक्षा की जिम्मेदारी भी यात्री की ही होगी।
4. यात्रा में शामिल होने का अलग से कोई शुल्क नही लगेगा।
5. कोविड संबंधी नियमों का पालन और आवश्यकतानुसार मास्क पहनना अनिवार्य होगा।
6. कोविड की तीनों वैक्सीन लेने वाले ही यात्रा में भाग ले सकेंगे।
7. यात्रा में शामिल होने से पहले यात्री अपने स्वास्थ्य की जाँच अवश्य करा लें।
8. अयोध्या से रामेश्वरम तक की यात्रा चार खण्डो में विभाजित है। 6/7 दिनों के हर खण्ड में श्रीराम से संबंधित 4/5 स्थान और आसपास के अकर्षक पर्यटन स्थल शामिल है। यात्री इनमे कभी भी, कही से भी, कितने दिनों के लिए भी, शामिल हो सकते है।
9. यात्रा के दौरान जिस क्षेत्र में जाएँ, वहीं का भोजन करना होगा। अलग से कोई व्यवस्था नही होगी।
10. यात्रियों से अपेक्षा होगी कि वे स्थानीय रीति-रिवाजों के अनुसार ही व्यवहार करेंगे।
11. यात्रा पूर्ण रूप से गैर राजनीतिक होगी।
12. यात्रा के दौरान संयोजक द्वारा निर्धारित सभी नियमों और अनुशासन का पालन अनिवार्य होगा।

श्री गणेश

श्रीराम वनगमन मार्ग – भारत एकता यात्रा–1

प्रथम भाग – दैनिक कार्यक्रम

(लाल रंग वाले स्थान श्रीराम से जुड़े है)

चरण 2	अयोध्या – खंड					
दिनांक	प्रस्थान स्थान	प्रस्थान समय	आगमन स्थान	आगमन समय	दूरी (किमी)	अवधि (घंटे)
20.02 .22 रविवार	अयोध्या	8.00	श्रृंगवेरपुर	12.00	170.00	4.00
20.02 .22 रविवार	श्रृंगवेरपुर	13.00	प्रयागराज	14.00	35.00	1.00
	प्रयागराज में अल्प विश्राम । भारद्वाज आश्रम, अक्षयवट दर्शन एवं संगम स्नान।					
20.02 .22 रविवार	प्रयागराज	16.00	चित्रकूट	18 .30	118.00	3.00
20.02 .22 रविवार	चित्रकूट में रात्रि विश्राम।					
21.02 .22 सोमवार	चित्रकूट में विश्राम । राम से संबंधित स्थानों का भ्रमण ।					
22.02.22 मंगलवार	चित्रकूट में ही । कुल तीन रातें ।					
23.02 .22 बुधवार	चित्रकूट	6.00	सारंगपुर (सतना)	8.00	97.00	2.00
23.02 .22 बुधवार	सारंगपुर	9.30	मैहर	11.30	91.00	2.00
23.02 .22 बुधवार	मैहर	13.30	जबलपुर	17.00	165.00	3.30
23.02 .22 बुधवार	रात्रि विश्राम जबलपुर एक रात					
24 .02 .22 गुरुवार	जबलपुर	6.00	रामटेक	13.00	235.00	7.00
24 .02 .22 गुरुवार	रामटेक	14.00	नागपुर	15.00	50.00	1.30
24 .02 .22 गुरुवार	नागपुर मे रात्रि विश्राम					

चरण 3	पंचवटी - खंड					
दिनांक	प्रस्थान स्थान	प्रस्थान समय	आगमन स्थान	आगमन समय	दूरी (किमी)	अवधि (घंटे)
25.02 .22 शुक्रवार	नागपुर	6.00	वर्धा	8.00	80.00	2.00
25.02 .22 शुक्रवार	वर्धा, सेवाग्राम में छोटा पड़ाव					
25.02 .22 शुक्रवार	वर्धा	10.00	रावेरी ग्राम	11.30	71.00	1.30
25.02 .22 शुक्रवार	रावेरी में ठहराव । कोदडं राम मंदिर के दर्शन					
25.02 .22 शुक्रवार	रावेरी	12.00	यवतमाल	13.00	51.00	1.00
25.02 .22 शुक्रवार	यवतमाल में दोपहर के भोजन के लिए अल्प विश्राम					
25.02 .22 शुक्रवार	यवतमाल	14.00	वासिम	17.00	164.00	3.00
25.02 .22 शुक्रवार	वासिम में रात्रि विश्राम। एक रात।					
26 .02 .22 शनिवार	वासिम	7.00	लोनार	9.30	78.00	1.30

	लोनार में छोटा पड़ाव। झील और राम से संबंधित स्थानों की यात्रा।					
26 .02 .22 शनिवार	लोनार	15.00	अजंता	19.00	157.00	4.00
26 .02 .22 शनिवार	अजंता में रात्रि विश्राम। एक रात।					
27.02 .22 रविवार	अजंता	11.00	औरंगाबाद	14.30	120.00	3.30
27.02 .22 रविवार	औरंगाबाद में रात्रि विश्राम और गृष्नेश्वर मंदिर का दर्शन					
28 .02 .22 सोमवार	एलोरा में मंदिर दर्शन					
28 .02 .22 सोमवार	औरंगाबाद	15.00	नासिक	19.00	184.00	4.00
28.02.22,01 & 02.03.2022 सोमवार - बुधवार	नासिक में रात्रि विश्राम। तीन रातें | आज का नासिक ही रामायण काल की पंचवटी है |अगले दो दिनों तक राम से जुड़े स्थलों का भ्रमण |					

चरण 4	किष्किन्धा - खंड					
दिनांक	प्रस्थान स्थान	प्रस्थान समय	आगमन स्थान	आगमन समय	दूरी (किमी)	अवधि (घंटे)
03.03.2022 गुरुवार	नासिक	6.00	मुंबई	11.00	170.00	5.00
	वालकेश्वर, बानगंगा मंदिर दर्शन					
03.03.2022 गुरुवार	मुंबई	14.00	पुणे	18.00	150.00	4.00
03.03.2022 गुरुवार	पुणे में रात्रि विश्राम । एक रात					
04.03.2022 शुक्रवार	पुणे	6.00	सोलापुर	12.00	255.00	6.00
04.03.2022 शुक्रवार	रात्रि विश्राम। यहां से तुलजापुर और वापस। तुलजा भवानी मंदिर दर्शन					
05.03.2022 शनिवार	सोलापुर	6.00	बादामी	18.00	219 + 80	10.00
05.03.2022 शनिवार	बादामी में रात्रि विश्राम | मार्ग में सूरेवन में सबरी आश्रम और कार्डिगुडा में अयोमुखी, कबंध मंदिर दर्शन					
06.03.2022 रविवार	बादामी	16.00	हम्पी	19.00	140.00	3.00
06.03.2022 रविवार	किष्किन्धा (आधुनिक हम्पी) में रात्रि विश्राम | कुल तीन रातें |					
7-8 .03.22 सोम एवं मंगलवार	राम से जुड़े स्थानों का भ्रमण |					

चरण 5	रामेश्वरम -- खंड					
दिनांक	प्रस्थान स्थान	प्रस्थान समय	आगमन स्थान	आगमन समय	दूरी (किमी)	अवधि (घंटे)
08 .03 .22 मंगलवार	हम्पी	17.00	चित्रदुर्ग	20.00	140.00	3.00
	चित्रदुर्ग में रात्रि विश्राम |					
09.03 .22 बुधवार	चित्रदुर्ग	6.00	बनवारा	8.30	120.00	2.30
09.03 .22 बुधवार	बनवारा	9.30	हॉलीबेडू	10 .15	30.00	45.00
09.03 .22 बुधवार	हॉलीबेडू	11.00	बेलूरु	11.30	17.00	0.30
09.03 .22 बुधवार	बेलूरु	13.00	बेंगलुरु	18.00	245.00	5.00
09.03 .22 बुधवार	वायुयान द्वारा बेंगलुरु से दिल्ली के लिए प्रस्थान।					

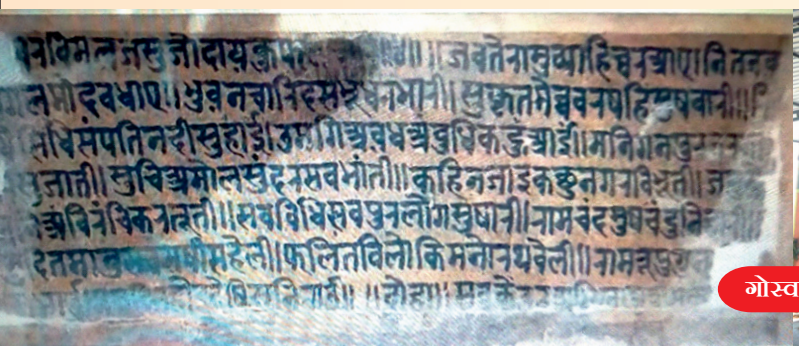
श्रीराम वनगमन मार्ग – भारत एकता यात्रा–1

द्वितीय भाग

26.12.2022 - 17.01.2023

दैनिक कार्यक्रम

चरण 5	रामेश्वरम - खंड					
दिनांक	प्रस्थान स्थान	प्रस्थान समय	आगमन स्थान	आगमन समय	दूरी (किमी)	अवधि (घंटे)
26.12.2022 सोमवार	वायुयान द्वारा दिल्ली से बेंगलुरु					
27.12.2022 मंगलवार	बेंगलुरु	08.30	श्रवणबेलगोला	11.30	145.00	3.00
27.12.2022 मंगलवार	श्रवणबेलगोला	13.30	रामनाथपुरा	15.00	78.00	1.30
	रामनाथपुरा	16.00	चुंचनकट्टे प्रपात	16.30	17.00	0.30
	चुंचनकट्टे प्रपात	17.30	मैसूर	19.00	60.00	1.30
27.12.2022 मंगलवार	मैसूर मे रात्रि विश्राम ।					
28.12.2022 बुधवार	मैसूर	9.00	ऊटी	12.00	125.00	3.00
	ऊटी मे रात्रि विश्राम ।					
29.12.2022 गुरूवार	ऊटी	6.00	तिरुचिरापल्ली	14.00	284.00	8.00
	तिरुचिरापल्ली में रात्रि विश्राम और श्रीरंगम में विष्णु मंदिर का दर्शन - एक रात					
30.12.2022 शुक्रवार	तिरुचिरापल्ली	17.00	तंजावुर	18.30	58.00	1.30
	तंजावुर में रात्रि विश्राम। दो रातें। 30/31.12.2022					
31.12.2022 शनिवार	बृहदेश्वर मंदिर का दर्शन और कुंभकोणम की यात्रा 45 कि.मी.					
01.01.2023 रविवार	तंजावुर	6.00	रामेश्वरम	12.00	246.00	6.00
01/02.01.2023 रविवार और सोमवार	रामेश्वरम में श्री राम से जुड़े स्थलों का भ्रमण । रामेश्वरम में रात्रि विश्राम । दो रातें ।					





गोस्वामी तुलसीदास हस्त लिखित अयोध्या काण्ड की प्रति एवं उनका जन्म स्थान

चरण 6	कांचीपुरम - खंड					
दिनांक	प्रस्थान स्थान	प्रस्थान समय	आगमन स्थान	आगमन समय	दूरी (किमी)	अवधि (घंटे)
03.01.2023 मंगलवार	रामेश्वरम	14.00	पेरावुरानी	17.00	179.00	03.30
04.01.2023 बुधवार	पेरावुरानी	07.00	कोडियकराई	09.30	97.00	02.30
04.01.2023 बुधवार	कोडियकराई	11.30	चिदंबरम	16.30	145.00	3.30
चिदंबरम में रात्रि विश्राम और मंदिरों का दर्शन । मार्ग में वेलकंनी चर्च और पूमपहार पत्तन पर अल्प विश्राम ।						
05.01.2023 गुरूवार	चिदंबरम	16.00	पुदुचेरी	17.30	64.00	1.30
पुडुचेरी में रात्रि विश्राम। एक रात।						
06.01.2023 शुक्रवार	पुदुचेरी	16.00	महाबलीपुरम	18.00	95.00	2.00
	महाबलीपुरम में रात्रि विश्राम। शोर मंदिर का दर्शन ।					
07.01.2023 शनिवार	महाबलीपुरम	16.00	कांचीपुरम	18.00	68.00	2.00
	कांचीपुरम में रात्रि विश्राम। मंदिरों का भ्रमण। एक रात।					
08.01.2023 रविवार	कांचीपुरम	16.00	चेन्नई	18.00	72.00	2.00
09.01.2023 सोमवार	चेन्नई में रात्रि विश्राम ।चेन्नई में पर्यटन स्थलों का भ्रमण ।					



प्रयागराज

चरण 7	रीवा - खंड					
दिनांक	प्रस्थान स्थान	प्रस्थान समय	आगमन स्थान	आगमन समय	दूरी (किमी)	अवधि (घंटे)
10.01.2023 मंगलवार	चेन्नई	5.00	विजयवाड़ा	15.00	452.00	10.00
	विजयवाड़ा में रात्रि विश्राम। एक रात					
11.01.2023 बुधवार	विजयवाड़ा	5.00	हैदराबाद	11.00	274.00	6.00
	हैदराबाद में रात्रि विश्राम । दो रातें					
13.01.2023 शुक्रवार	हैदराबाद	5.00	नागपुर	17.00	500.00	10.00
	नागपुर में रात्रि विश्राम। एक रात					
14.01.2023 शनिवार	नागपुर	7.00	जबलपुर	15.00	280.00	8.00
	जबलपुर में रात्रि विश्राम। एक रात।					
15.01.2023 रविवार	जबलपुर	6.00	रीवा	14.00	245.00	8.00
	रीवा में रात्रि विश्राम। एक रात					
16.01.2023 सोमवार	रीवा	5.00	वाराणसी	12.00	222.00	7.00
	वाराणसी में रात्रि विश्राम। बाबा विश्वनाथ का दर्शन					
17.01.2023 मंगलवार	वाराणसी	6.30	बड़ौरा	10.00	137.00	3.30

कुल दिन - 43
कुल रात्रि पड़ाव - 40

यात्रा 6920 कि0 मी0
स्थानीय भ्रमण 2000 कि0 मी0

कुल दूरी - लगभग 9000 कि0 मी0

चरण 8

लंका - खंड

20.02.2023 से 02.03.2023 (दस दिन) लंका भ्रमण ।
श्रीराम से जुड़े स्थलों के दर्शन।

चरण 9

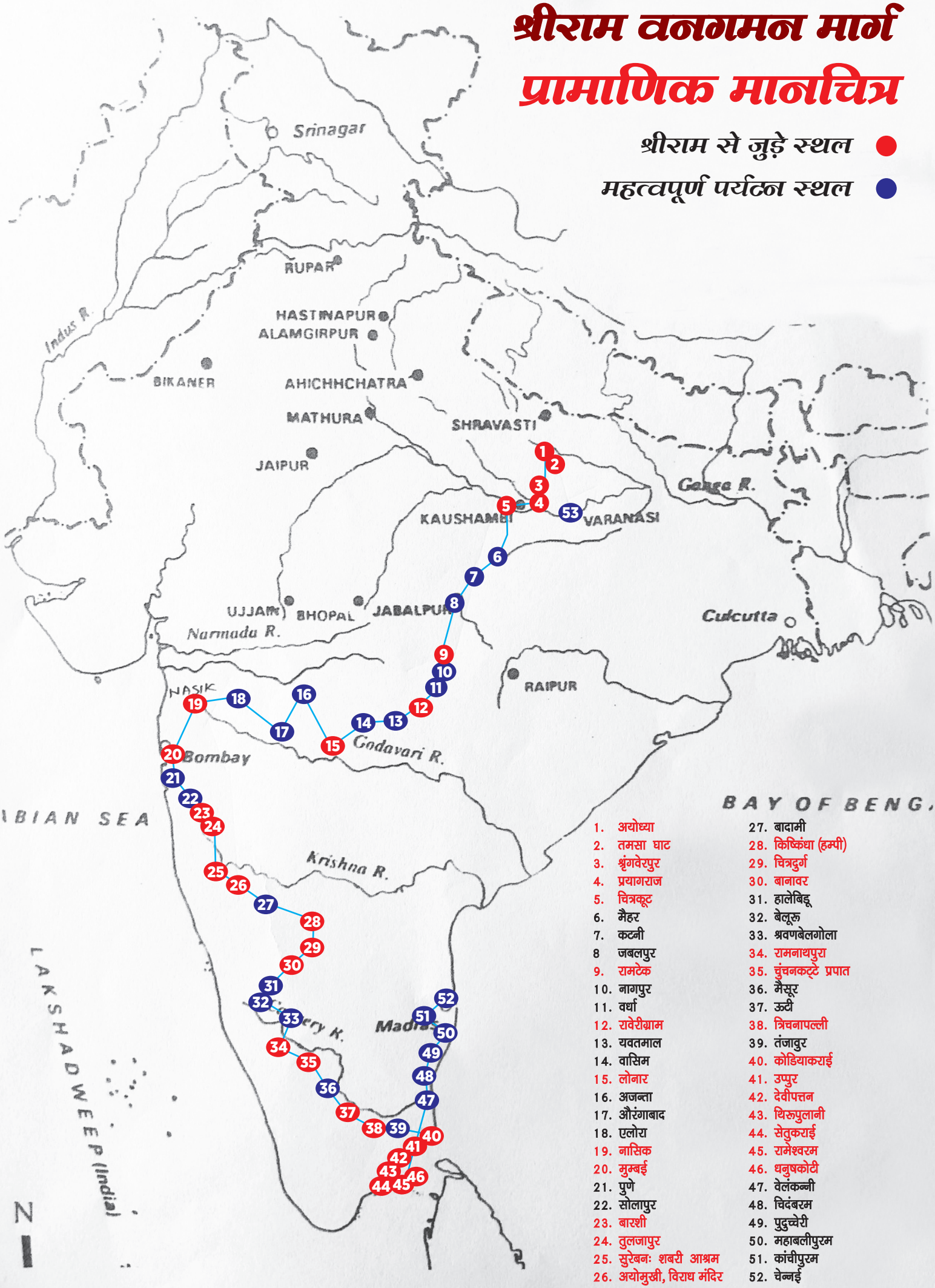
वाराणसी - अयोध्या खंड

लंका भ्रमण के बाद यात्रा वाराणसी से चलकर अयोध्या मे समाप्त होगी ।

श्रीराम वनगमन मार्ग
प्रामाणिक मानचित्र

श्रीराम से जुड़े स्थल

महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल



1. अयोध्या
2. तमसा घाट
3. श्रृंगवेरपुर
4. प्रयागराज
5. चित्रकूट
6. मैहर
7. कटनी
8 जबलपुर
9. रामटेक
10. नागपुर
11. वर्धा
12. रावेरीग्राम
13. यवतमाल
14. वासिम
15. लोनार
16. अजन्ता
17. औरंगाबाद
18. एलोरा
19. नासिक
20. मुम्बई
21. पुणे
22. सोलापुर
23. बारशी
24. तुलजापुर
25. सुरेबनः शबरी आश्रम
26. अयोमुखी, विराध मंदिर
27. बादामी
28. किष्किंधा (हम्पी)
29. चित्रदुर्ग
30. बानावर
31. हालेबिडू
32. बेलूरू
33. श्रवणबेलगोला
34. रामनाथपुरा
35. चुंचनकट्टे प्रपात
36. मैसूर
37. ऊटी
38. त्रिचनापल्ली
39. तंजावुर
40. कोडियाकराई
41. उप्पुर
42. देवीपत्तन
43. थिरूपुलानी
44. सेतुकराई
45. रामेश्वरम
46. धनुषकोटी
47. वेलंकन्नी
48. चिदंबरम
49. पुदुच्चेरी
50. महाबलीपुरम
51. कांचीपुरम
52. चेन्नई

श्रीराम वनगमन मार्ग

प्रामाणिक मानचित्र

श्रीराम से जुड़े स्थल



1. अयोध्या
2. तमसा घाट
3. श्रृंगवेरपुर
4. प्रयागराज
5. चित्रकूट
6. रामटेक
7. रावेरीग्राम
8. लोनार
9. नासिक
10. मुम्बई
11. बारशी
12. तुलजापुर
13. सुरेबनः शबरी आश्रम
14. अयोमुखी, विराध मंदिर
15. किष्किंधा (हम्पी)
16. चित्रदुर्ग
17. बानावर
18. रामनाथपुरा
19. चुंचनकट्टे प्रपात
20. त्रिचनापल्ली
21. कोडियाकराई
22. उप्पुर
23. देवीपत्तन
24. थिरुपुलानी
25. सेतुकराई
26. रामेश्वरम
27. धनुषकोटी

कैप्टन जे.पी. सिंह

संक्षिप्त परिचय



धरती पुत्र

किसान माता- पिता की एकमात्र संतान कैप्टन जे पी सिंह ने अपनी आरंभिक शिक्षा गाँव के विद्यालय और उच्च शिक्षा पटना विश्वविद्यालय एवं देश विदेश के प्रतिष्ठित शिक्षा संस्थानों से प्राप्त की अपनी लगन और प्रतिभा के बलपर भारत की सर्वोच्च सेवाओं भारतीय सेना, प्रशासनिक सेवा तथा न्यायपालिका में उच्च पदों पर लगातार 40 वर्षों तक देश की सेवा करने का अनुभव इन्हें प्राप्त है |

बचपन से ही परिश्रमी तथा बहुमुखी प्रतिभा के धनी कैप्टन सिंह विद्यार्थी जीवन में विश्वविद्यालय के सर्वश्रेष्ठ वक्ताओं में एक तथा आकाशवाणी के नियमित वार्ताकार रहे हैं | जे पी आन्दोलन में सक्रिय भागीदारी के कारण आपातकाल में इनके विरुद्ध वारंट भी जारी हुआ था |

देश प्रेम की आग

बाल्यकाल से ही देश प्रेम और समाज सेवा की गहन भावना से प्रेरित श्री सिंह ने माता -पिता की इकलौती संतान होने के बावजूद 1978-79 में आईएस, पीसीएस की आराम दायक और सुरक्षित नौकरियों का विकल्प छोड़ मातृभूमि की रक्षा के लिए सीमा पर सैनिक बनने का जोखिम भरा संकल्प लिया और भारतीय सेना में अधिकारी चुने गए |

सेना में शानदार सेवा के लिए इन्हें " उत्कृष्ट सेवा पदक " से सम्मानित किया गया | लेकिन दुर्भाग्यवश सीमा पर सेवा के दौरान घायल होने के कारण इन्हें सैन्य सेवा छोडनी पड़ी |

सरस्वती पुत्र

कठिन परिस्थितियों का सामना करते हुए कॉलेज छोड़ने के आठ साल बाद, परिवार की जिम्मेवारी उठाते, सेना की व्यस्त नौकरी करते हुए श्री सिंह ने पुनः पढाई की और सामान्य उम्मीदवार की तरह केवल एक ही साल में संघ लोक सेवा आयोग की सिविल सेवा परीक्षा, 1986 में और 1986 में ही यू. पी. पी सी एस की परीक्षा में एस. डी. एम. के पद पर चुने जाकर शानदार सफलता अर्जित की |

बाद में 2017 में माननीय सर्वोच्च न्यायालय और भारत सरकार ने इनकी प्रतिभा, ईमानदारी और कार्य क्षमता से प्रभावित होकर इन्हें न्यापालिका में उच्च पद के लिए चुना |

इस तरह ग्रामीण परिवेश से आकर आईएस, पीसीएस, सैन्य अधिकारी तथा न्यायाधीश के पद पर चयनित होने का असाधारण कीर्तिमान बनाने वाले श्री सिंह देश में इस तरह के एकमात्र व्यक्ति हैं

उत्कृष्ट कार्य कुशलता

सैन्य सेवा के बाद रेल अधिकारी के रूप में यात्री सुविधा और रेलवे की आय बढ़ाने के क्षेत्र में इन्होने अमिट छाप छोड़ी | रेल की सफाई व्यवस्था का आधुनिकी करण और नए ढांचे का निर्माण इन्होने किया जो आज पुरे देश के हर क्षेत्र में लागू है | यात्रियों की सुविधा के लिए इन्होने बेगमपारा एक्सप्रेस, नई दिल्ली-लखनऊ एसी एक्सप्रेस जैसी कई नयी गाड़ियाँ चलवाईं | रेलगाड़ियों में अवांक्षित, आतंकवादी तत्वों को रोकने और टिकटों की कालाबाजारी बंद करने के लिए इन्होने यात्रा में यात्रियों द्वारा पहचान पत्र लेकर चलने और मोबाइल नंबर देने का नियम लागू किया | आम जन को कंप्यूटर और लैपटॉप से आसानी से टिकट मिल सके इसके लिए इन्होने कई उपाय किये |

रेल की आय में असाधारण बढ़ोतरी का कीर्तिमान भी इनके नाम है | इनके उत्कृष्ट कार्यों को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार ने इन्हें रेलवे के सर्वोच्च पुरस्कार " नेशनल अवार्ड फॉर एक्सीलेंस इन वर्क " से सम्मानित किया |

रेलवे दावा अधिकरण में न्यायाधीश के रूप में किये गए सुधारों के कारण लंबित मामलों में भारी कमी आयी और आर्थिक दृष्टि से कमजोर नागरिकों को शीघ्र और सही न्याय मिला | पहली बार सारे फैसले हिंदी में लिखने और उनकी एक प्रति वादी को सरकारी खर्चे पर उसके घर भेजने की व्यवस्था की | ये क्रांतिकारी सुधार वादियों के लिए वरदान साबित हुए हैं |

सामाजिक जुड़ाव

सामाजिक दृष्टि से इनका परिवार क्षेत्र का एक सर्वाधिक शिक्षित, प्रगतिशील एवं आदर्श संयुक्त परिवार है | देश विदेश में फैला यह परिवार भारतीय संस्कृति एवं परंपरा का एक उत्कृष्ट उदहारण है | डॉक्टर, इंजिनियर, वकील, प्रशासक, एमबीए, बैंकर्स, उद्यमी आदि से भरे इस परिवार में स्त्रियों की सहभागिता और सफलता उल्लेखनीय है, जो प्रतिभा के बलपर अपने - अपने क्षेत्रों में सफल और उच्च पदों पर स्थापित हैं |

क्षेत्र के विकास कार्यों में भी इनका योगदान अग्रणी है | जहाँ एक तरफ जनहित के कार्यों जैसे पंचायत भवन, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र आदि के लिए इन्होने अपनी कीमती जमीन सरकार को दान दी है, दूसरी तरफ अपने साधनों से क्षेत्र में शिक्षा, खेलकूद तथा सांस्कृतिक गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए नियमित कार्यक्रम करते रहते हैं |

विद्यार्थी जीवन में ही गाँव में किसानों की आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए इन्होने एक कृषक सहकारी समिति का गठन किया था, जिसके माध्यम से किसानों को सस्ते दर पर आधुनिक बीज, रासायनिक खाद और उन्नत कृषि तकनीक प्रदान की गयी, जिससे उनकी आय बढ़ी और हरित क्रांति की शुरुआत हुई |

ड्यूटी के लिए दूर रहने तथा कार्य की व्यस्तताओं के बावजूद अपने गाँव और क्षेत्र से इनका लगाव बहुत घनिष्ठ एवं नियमित है | ये हर साल होली और दशहरे में सपरिवार अपने गाँव अवश्य आते हैं, और गाँव वालों के साथ बड़े उत्साह से इन त्योहारों में शामिल होते हैं | होली गायन में इन्हें विशेष महारत हासिल है |

समर्पित जीवन

कैप्टेन सिंह विनम्र एवं सुलझे विचारों वाले व्यक्ति हैं, जिनका जीवन देश और समाज के कल्याण लिए समर्पित हैं | जहाँ एक सैन्य अधिकारी के रूप में सेना ने उनके अन्दर देशभक्ति, त्याग और बलिदान की भावना, अनुशाशन, असाधारण नेतृत्व क्षमता, कर्तव्य निष्ठा ओर त्वरित निर्णय लेने की योग्यता विकसित की है, वहीं प्रशासनिक सेवा के अनुभव ने उन्हें जन सामान्य की समस्यायों को समझने तथा उनका निदान करने की क्षमता प्रदान की है | न्यायाधीश के पद पर कार्य करने के अनुभव ने विपरीत पक्षों को संतुलित दृष्टि से देखने, समझने की क्षमता विकसित की है |

अपनी 40 वर्षों की सेवा के दौरान श्री सिंह अपनी कर्त्तव्य क्षमता, कार्य कुशलता, निष्पक्षता, संवेदनशीलता और ईमानदारी के लिए जाने जाते थे | इस दौरान सभी सेवाओं में उनका कार्य एकदम बेदाग और निष्कलंक रहा है |

बाल्यकाल से ही श्री सिंह को पुस्तकों से बहुत लगाव रहा है | पढना लिखना इनका सबसे प्रिय कार्य है | भारतीय संस्कृति, साहित्य, इतिहास, अर्थशास्त्र और राजनीतिक व्यवस्था इनके पसंदीदा विषय हैं, जिनपर इनका अध्ययन गहरा है |

इस तरह श्री सिंह का व्यक्तित्व ग्रामीण -- शहरी, सेना -प्रशासन - न्यायपालिका तथा ठेठ अनुभव और विद्वता का एक अनूठा मिश्रण है, जिसने इन्हें जीवन के हर क्षेत्र में संतुलित और सम्यक दृष्टि विकसित करनें में मदद की है |

सम्प्रति कैप्टन सिंह अपना पूरा समय क्षेत्र में विकास कार्यों, लेखन तथा पठन-पाठन में बिता रहे हैं |

संयोजक :

कैप्टन जे.पी. सिंह

भू.पू. प्रशासक एवं न्यायाधीश, अध्यक्ष, पूर्वोदय ट्रस्ट

संपर्क : 7827442820

jpsrathore@gmail.com

सचिव :

अमिताभ राठौर

संपर्क : 9310088814

amitabhrathore292@gmail.com